

# जगजननी जय जय आरती

तू ही सत-चित-सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा ।  
सत्य सनातन सुन्दर, पर-शिव सुर-भूषा ॥

जगजननी जय जय.. ॥

आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी ।  
अमल अनन्त अगोचर, अज आनँदराशी ॥

जगजननी जय जय.. ॥

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी ।  
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर सँहारकारी ॥

जगजननी जय जय.. ॥

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया ।  
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ॥

जगजननी जय जय.. ॥

राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा ।  
तू वांछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ॥

जगजननी जय जय.. ॥

दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा ।  
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा ॥

जगजननी जय जय.. ॥

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू ।  
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ॥

जगजननी जय जय.. ॥

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या, तू शोभाऽऽधारा ।  
विवसन विकट-सरुपा, प्रलयमयी धारा ॥

जगजननी जय जय.. ॥

तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना ।

रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ॥

जगजननी जय जय.. ॥

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।

कालातीता काली, कमला तू वरदे ॥

जगजननी जय जय.. ॥

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी ।

भेदप्रदर्शिनि वाणी, विमले! वेदत्रयी ॥

जगजननी जय जय.. ॥

हम अति दीन दुखी माँ!, विपत-जाल घेरे ।

हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ॥

जगजननी जय जय.. ॥

निज स्वभाववश जननी!, दयादृष्टि कीजै ।

करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै ॥

जगजननी जय जय.. ॥

जगजननी जय! जय!! माँ! जगजननी जय! जय!!

भयहारिणि, भवतारिणि, माँ भवभामिनि जय! जय ॥

जगजननी जय जय.. ॥

